# यशोगान

## प्रस्तुत है विश्व रंगमंच के एक ऐसे विराट व्यक्तित्व की दास्तां जिसका युगों-युगों से होता रहेगा यशोगान...यशोगान..यशोगान

जान है ब्राह्मण परिवार की
शान है ईश्वरीय संसार की
आओ कहें कहानी उस महान हस्ती की
नाम है जिनका दादी जानकी

## 1916 – 1916 का वो वर्ष सुहाना था जब सृष्टि रंगमंच प्रतीक्षा कर रहा था अपने एक सर्वश्रेष्ठ पार्टधारी के आगमन का।

आओ आओ आओ
हमारे साथ गुनगुनाओ
बहारों तुम मुसकराओ
कली तुम खिलखिलाओ
दीपक तुम जगमगाओ
चहुँ ओर खुशियाँ बिखराओ

आज गा रही धरती गौरव गान
सन् 1916 का है ये दिन महान

सिंध की धरनी आज हर्षाई है
गोद में एक नन्ही परी उतर आई है

*(गीतः छोटी सी, प्यारी सी, नन्ही सी आई कोई परी/मेरे घर आई इक नन्ही परी...)*

## 1937– सन् 1937 के वे अनमोल पल जब स्वयं भगवान की नजर उस अनमोल हीरे पर पड़ी और उस नजर ने उसे अपने ताज में जड़ लिया।

ओम मंडली की ओम धुन ने क्या जादू चलाया
भूल गई दुनिया तन-मन में सत्संग समाया

निश्चय की हाथ में थी ऐसी गजब रेखा

चलते-चलते कोई मिला तो फिर मुड़कर न देखा

*(गीतः चलते-चलते यूँ ही कोई मिल गया था...)*

## 1950

**आया सन् 1950 का जब दादी जी चेतन ज्ञानगंगा बन भारत के कोने-कोने को पावन करने निकली।**

भारत भूमि पर बाबा ने वाह क्या सेवा कराई
जैसे सूखी मरू भूमि पे ज्ञान की हरियाली छाई।

भारत के कोने-कोने में बन ज्ञान-गंगा आप बढ़ते रहे
सच्चे समर्पण वारिस बच्चे बना, बाबा पे बलिहार करते रहे।

आपके मुख से शब्द नहीं, निकलते प्रभु वरदान हैं
परमात्म प्रेम का अनुभव कराती आपकी रूहानी मुसकान है।

*(गीतः किसी ने अपना बनाके मुझको मुसकुराना सिखा दिया...)*

## 1969

**सन् 1969 के बाद दादी जी का विदेश सेवा का पार्ट खुला। विदेश की धरनी भी इस महान आत्मा की चरणरज पाकर धन्य-धन्य हो उठी। उड़ती कला के विमान द्वारा भूमंडल का परिभ्रमण कर आप अनगिनत आत्माओं को प्रभु पालना का प्रसाद बाँटने लगी।**

साकार हुए अब अव्यक्त,
विदेश सेवा की सौंपी जिम्मेवारी
मधुबन का मॉडल बनाना,
दी वरदान और शक्तियाँ सारी।

त्यागी, तपस्वी आपके जीवन ने,
जीवन ज्योत कितनों की जगाई
देश से देश के दीप जले,
ज्ञान प्रकाश से धरा जगमगाई

तप के बल से मन को, ऐसा स्थिर अडोल बनाया
विश्व में सबसे स्थिर मन का अनूठा खिताब पाया

डॉक्टर, ज्ञानी और वैज्ञानिक सबको चकित किया
नैन बैन सूरत सीरत से, जहां में शिव को प्रत्यक्ष किया
*(गीतः तुम्हें पाके हमने जहां पा लिय है....)*

## 2007

**सन् 2007 जब इस अविनाशी रुद्र गीता ज्ञान यज्ञ के संचालन की जिम्मेवारी दादी जी को मिली और दादी जी इसे बखूबी निभा रही हैं।**

प्रकाश अपना फैलाकर,
दादी प्रकाशमणि विलीन हुए
तब डबल जिम्मेवारी मिली,
मुख्य प्रशासिका पद पर आसीन हुए।

हर श्वास और संकल्प में बसा बाबा नाम है
मुरली की तान पर झूमते सुबहो-शाम हैं
मधुबन आपकी जान है, आप मधुबन की शान हैं।

*(गीतः सखी री मैंने पायो तीन रत्न..इक बाबा, मुरली, मधुबन...)*

## 2015

**आ गया सन् 2015..दादी जी का 100वां जन्मवर्ष..**
**आध्यात्मिक जगत के इस दैदीप्यमान सितारे को हम सभी के दिल की दुआयें, शुभकामनायें... वो महान हस्ती जिस पर स्वयं परमात्मा को नाज है...वो शाश्वत दीपशिखा जो अखिल ब्रह्मांड को प्रकाशमान कर रही है..दिव्य आलोक बिखेरने वाली दिव्य आत्मा हम सबकी अति प्यारी दादी जी के इस स्वर्णिम सेवा सफर को हम धूमधाम से मना रहे हैं।**

संगमयुग में संग चलते-चलते,
आ गया 2015 का नया साल
आपका 100वां जन्मदिवस दादी जी,
कर रहा सबके दिल को खुशहाल।

अर्जी ये बाबा आज हमारी सुन लेना
लेकर हम सबकी उम्र इनको अमर कर देना।

*(गीतः बार-बार दिन ये आये, बार-बार दिल ये गाये..तुम जियो हजारो साल...)*